जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2021 ।। अंक–08 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

आत्मविश्वास की प्रतीक पशु सखी सिम्पी
(पृष्ठ – 02)

लाभार्थियों को 'ग्रेजुएशन' तक पहुँचाना मेरा लक्ष्य
(पृष्ठ – 03)

संगठित महिलाओं ने कम किया सामाजिक भेदभाव
(पृष्ठ – 04)

जीविका दीदियों ने बदला महिला दिवस के मायने

बदलाव की नई तस्वीर प्रस्तुत कर रही हैं दीदियां

बिहार में पहले भी 08 मार्च को महिला दिवस का आयोजन किया जाता था लेकिन वर्ष 2007 के बाद इसके मायने बदल गए। जीविका द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं के सशक्तीकरण के सार्थक प्रयासों ने महिला दिवस को एक नया आयाम दिया है। आज बिहार की 1 करोड़ 25 लाख से अधिक महिलाएं जीविका से जुड़कर अपने जीवन में आए सकारात्मक बदलावों से महिला दिवस के उद्देश्यों को सफलीभूत कर रही हैं।

जीविका द्वारा बिहार में गरीबी उन्मूलन के लिए अक्टूबर 2007 में कार्य आरंभ किया गया। उस समय बिहार की आधी आबादी–यानी महिलाओं को उनको अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए काफी जद्दोजहद करना पड़ रहा था। एक तरफ जहां घर में वे घरेलू हिंसा की शिकार थीं वहीं, घर से बाहर अपने अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ रही थीं। जीविका के लक्षित समुदाय यानी ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं के पास रोजगार की उपलब्धता की कमी थी। विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर उनमें जागरूकता का भी अभाव था। जीविका के प्रयासों से बिहार की महिलाएं संगठित हुईं और अपनी समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर हुईं। जीविका के प्रयासों से उनके जीवन में ऊर्जा का नया संचार हुआ और वो सामाजिक एवं आर्थिक मोर्चों पर परचम फहराने में कामयाब हुईं। जीविका दीदियों की सफलता की पराकाष्ठा यह रही कि उनकी आवाज पर बिहार में पूर्ण शराबबंदी हो गयी। इस परिवर्त्तनकारी घटना ने जीविका दीदियों की मौन क्रांति को मुखरता प्रदान की। शराबबंदी के बाद घरेलू हिंसा में कमी आई। आय का एक बड़ा हिस्सा जो शराब में चला जाता था उस पर रोक लगी एवं पैसे का सदुपयोग होने लगा।

वर्त्तमान में जीविका दीदियाँ पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। परिवार एवं समाज में उनके मान–सम्मान में वृद्धि हुई है। जीविका द्वारा रोजगार एवं स्वरोजगार के स्तर पर विकल्प की उपलब्धता ने उन्हें आर्थिक रूप से स्वाबलंबी बना दिया है जिसका परिणाम यह हुआ कि दीदियों ने अपने परिवारों के बेहतर वर्त्तमान एवं स्वर्णिम भविष्य का दरवाजा खोल दिया है। दीदी एवं उनके परिवार बिहार में हुए बदलाव की तस्वीरों के साथ हमारे सामने नया मानक स्थापित कर रहा है। लैंगिक समानता के लिए भी जीविका द्वारा किए गए प्रयासों का बेहतर परिणाम हमारे सामने है।

जीविका ने महिला दिवस का आयोजन शहर की चकाचौंध से निकालकर ग्रामीण परिवारों के बीच तक पहुंचाया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को जीविका दीदियाँ कई स्तरों पर उत्साह के साथ आयोजित करती हैं। इन आयोजनों की गतिविधियों में उनका सशक्तीकरण परिलक्षित होता है। महिला दिवस के मौके पर सामुदायिक संगठन स्तर पर बेहतर कार्य करने वाली दीदियों एवं उनकी गतिविधियों में सहयोग करने वाले सामुदायिक कैडरों को सम्मानित भी किया जाता है।

वर्ष 2021 के महिला दिवस के मौके पर जीविका द्वारा प्रखंड एवं संकुल संघ स्तर पर महिला सशक्तीकरण एवं महिला कल्याण से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर वातावरण निर्माण एवं जागरूकता हेतु सांस्कृतिक गतिविधियों, जागरूकता रैली, सम्मान समारोह भी आयोजित किए जाने हैं।

संगम विद्या निधि योजना से भविष्य सँवार रहे बच्चे

संगम विद्या निधि योजना, संगम जीविका संकुल स्तरीय संघ, मुशहरी, मुजफ्फरपुर की महत्त्वकांक्षी पहल है। इसके अंतर्गत समुह से जुड़े वैसे बच्चे लाभान्वित होते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है किन्तु जो पढ़ाई में अच्छे हैं। इसके लिए संकुल संघ से जुड़े सभी परिवारों द्वारा स्वेच्छा से माह में 2 रुपये से 5 रुपये की बचत अपने स्वयं सहायता समूहों में किया जाता है एवं यह राशि संकुल संघ को उपलब्ध करायी जाती है। इस राशि से मैट्रिक पास गरीब बच्चों को आगे की पढ़ाई जारी रखने में मदद प्रदान की जाती है।

संगम संकुल स्तरीय संघ द्वारा इस सकारात्मक पहल की शुरुआत अप्रैल 2015 में की गई थी। आंध्र प्रदेश के एक्सपोजर परिभ्रमण से प्रेरणा ले कर संगम संकुल स्तरीय सदस्यों की दीदियों ने अपने संकुल स्तरीय संघ की आरजीबी बैठक में ऐच्छिक बचत का प्रस्ताव रखा एवं बैठक में इस पर सहमति बनी। यह निर्णय लिया गया कि संकुल संघ से जुड़े खासकर वैसे परिवारों के बच्चों को सहयोग राशि संकुल संघ द्वारा दी जाएगी जिनके माता–पिता बच्चों को पढ़ाने में असमर्थ हैं एवं बच्चों ने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली हो।

इस बचत से गणतंत्र दिवस 2017 को तीन बच्चों को 4100–4100 रुपए की अनुग्रह राशि चेक के माध्यम से संगम संकुल स्तरीय संघ द्वारा आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए दी गई। प्रत्येक 15 अगस्त और 26 जनवरी के शुभ अवसर पर "संगम विद्या निधि" हेतु चयनित बच्चों को अनुग्रह राशि का चेक प्रदान किया जाता है। चयन प्रक्रिया सामाजिक अंकेक्षण उपसमिति द्वारा पारदर्शी तरीके से की जाती है। अभी तक 32 बच्चों को "संगम विद्या निधि" का लाभ दिया जा चुका है। इसका प्रतिफल यह हुआ कि बच्चे इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट, सिविल सेवा, बैंकिंग, बी.एड. एवं अन्य व्यवसायिक कोर्सों में प्रवेश के लिए तनावमुक्त होकर तैयारी कर रहे हैं।

आत्मविश्वास की प्रतीक पशु सखी सिम्पी

कहते हैं कि– 'जज्बा हो तो कोई भी मंजिल दूर नहीं होती।' दृढ़ इच्छाशक्ति और कड़ी मेहनत के बदौलत किसी भी लक्ष्य को हासिल करना आसान है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है चंदा गांव की सिम्पी मंडल ने।

अररिया जिले के नरपतगंज प्रखंड अंतर्गत सिम्पी अभी पशु सखी हैं। पहले वे पति और दो बच्चों के साथ दिल्ली में रहती थीं। लेकिन, कुछ पारिवारिक कारणों से उन्हें सपरिवार अपने गांव लौटना पड़ा। गांव आने के बाद इनके सामने बड़ा संकट रोजी–रोटी का था। इंटीरियर डिजाइनर का काम करने वाले पति विक्रम मंडल के लिए यहां रोजगार का कोई रास्ता नहीं था। ऐसे में उन्होंने यहां छोटा–मोटा व्यवसाय करना तय किया। उन्होंने किराने की दुकान खोली। लेकिन, इससे होने वाली आमदनी 4 लोगों का परिवार चलाने के लिए कम पड़ने लगी। ऐसे में इंटर पास सिम्पी ने खुद के बल पर कुछ नया करने की ठानी। यहां रोजगार का कोई विकल्प नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में जीविका ने उनकी योग्यता को देखते हुए उन्हें पशु सखी बनने का मौका दिया। एक अच्छी पशु सखी बनने के लिए सिम्पी ने कड़ी मेहनत की। पशुओं से जुड़ी बीमारियों और बेहतर ढंग से उनकी देखभाल करने के लिए सिम्पी को प्रशिक्षण भी मिला। धीरे–धीरे अपनी कड़ी मेहनत, लगन और योग्यता के कारण इलाके में इनको नई पहचान मिली। इससे इनकी आमदनी भी बढ़ी और परिवार की हालत में सुधार होने लगा। सिम्पी की मेहनत और लगन का ही नतीजा है कि सिम्पी अभी अररिया जिला में बने 'सीमांचल बकरी उत्पादक कंपनी' की अध्यक्ष बन चुकी हैं। यह कंपनी अररिया, किशनगंज, पूर्णिया और कटिहार को मिलाकर बनाई गयी है। अपनी सफलता के लिए सिम्पी जीविका को हृदय से धन्यवाद देती हैं।

सामूहिकता से टूटी रूढ़िवादी मानसिकता

दरभंगा जिला के सिंघवारा प्रखंड अन्तर्गत मुस्कान जीविका महिला ग्राम संगठन से संबद्ध तुलसी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य सावित्री देवी पैसे की तंगी की वजह से अपने घर में आए दिन हो रहे कलह से परेशान थी। सावित्री दीदी कुछ काम करके पैसे कमाना चाहती थी। उसने अपनी क्षमता संवर्धित की और सामुदायिक संसाधन सेवी के रुप में स्वयं को ढ़ाला। तत्पश्चात परियोजना की आवश्यकता के अनुसार एवं पति की सहमति के बाद सावित्री देवी सीआरपी के रूप में कार्य करने के लिए बाहर चली गई। कुछ ही दिन बाद गाँव के अन्य पुरुष उनके पति को ताना देने लगे तो पति ने सावित्री को फोन पर काफी भला–बुरा कहा। आखिरकार दीदी बीच में ही काम छोड़कर घर वापस पति के पास लौट आई। पति के व्यवहार से दुखी होकर वह मायके चली गयी।

सावित्री दीदी के साथ घटित इस घटना के विषय में जब ग्राम संगठन को पता चला तो सभी दीदियों ने इस मामले में सख्त कदम उठाने का फैसला किया। ग्राम संगठन की बैठक में दीदियों ने सर्वसम्मति से फैसला किया कि समाज में पुरुष प्रधान मानसिकता के खिलाफ वे सामूहिक रूप से आवाज उठाने का दीदियों ने निर्णय लिया। दीदियों ने सावित्री देवी को अपने मायके से घर बुलाया। ग्राम संगठन की एक विशेष बैठक का आयोजन कर इसमें सावित्री देवी और उसके पति दोनों को बुलाया गया। बैठक में सावित्री दीदी के पति ने स्वीकार किया कि गाँव के पुरुष ताना देते थे। इस कारण गुस्से में आकर उसने अपनी पत्नी के साथ मारपीट की थी। सभी दीदियों ने उसके पति को समझाया कि दूसरों के कहने पर अपनी पत्नी के साथ मारपीट नहीं करनी चाहिए थी। दीदियों द्वारा समझाने के बाद उसके पति ने स्वीकार किया कि पत्नी के साथ मारपीट करना उनकी भूल थी और भविष्य में अब वह कभी इस तरह की गलती नहीं करेगा। सावित्री देवी अब बेरोकटोक सीआरपी के कार्य से बाहर जाती हैं एवं समूह संबंधी गतिविधियों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती हैं।

लाभार्थियों को 'ग्रेजुएशन' तक पहुँचाना मेरा लक्ष्य

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत एमआरपी का काम करने वाली मुन्नी शर्मा जमुई जिला के लक्ष्मीपुर प्रखंड की मटिया पंचायत के हनुमान चौक की रहने वाली हैं। मुन्नी की शादी कम उम्र में ही सुनील शर्मा से हो गई थी। मुन्नी जब शादी के बाद ससुराल आई तो उनके पति कमाने के लिए मुंबई चले गये और मुन्नी ससुराल में ही सास के साथ रहने लगीं।

एक दिन कुछ महिलाएं उनके घर पर आईं और उन्हें जीविका के बारे में बताया। उस समय जीविका के बारे में गाँव–गाँव में घूम कर लोगों को बताया जा रहा था। जानकारी के उपरांत उसने अपना आवेदन कार्यालय में जमा किया और जीविका मित्र के रुप में मुन्नी का चयन हो गया। जीविका मित्र के रुप में मुन्नी ने करीब छह साल तक काम किया। इस दौरान मुन्नी ने काफी मुश्किलों का सामना भी किया। कई दीदियों को मुन्नी ने जागरूक करने में भी अहम् भूमिका निभाई। मुन्नी के पति मुंबई से लौट आए पर वे कोई भी काम नहीं करते थे। पूरे घर परिवार की जिम्मेदारी मुन्नी पर ही थी। समस्याओं के होते हुए भी मुन्नी ने हिम्मत नहीं हारी। जब जमुई जिले में सतत् जीविकोपार्जन के लिए सीआरपी ड्राइव चलाया जा रहा था, तो मुन्नी भी साथ में काम कर रही थी। ड्राइव के दौरान मुन्नी के हौसले एवं काम को देखते हुए उनका चयन एसजेवाई एमआरपी के रुप में कर दिया गया। मुन्नी कहती हैं कि– 'सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उनकी जिन्दगी को एक नया रूप दिया है। जिन्दगी में कभी साईकिल नहीं चलाई थी लेकिन अब स्कूटी चलाती हूँ।' आगे की योजना के बारे में पूछने पर मुन्नी बताती हैं कि वह इसी क्षेत्र में और भी बड़ा दायित्व निभाना चाहती हैं। एसजेवाई लाभार्थियों को 'ग्रेजुएशन' तक ले जाने में मुन्नी सफल रही हैं।

संगठित महिलाओं ने कम किया सामाजिक भेदभाव

बिहार में जीविका परियोजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलाओं में आर्थिक एवं सामाजिक स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता और आजीविका संबंधी गतिविधियों के अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूक किया जाता रहा है। इसी कड़ी में जीविका समूह से जुड़ी दीदियों को लैंगिक समानता जैसे अतिसंवेदनशील विषयों पर भी जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है। यूं तो वर्त्तमान परिदृश्य में महिला एवं पुरुषों के बीच कई मुद्दों पर बराबरी देखी जा रहा है; फिर भी बालिका शिक्षा, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों के अलावा यौन हिंसा, घरेलू हिंसा, कन्या भ्रुण हत्या, लड़कियों को सम्पत्ति का अधिकार जैसे संवेदनशील मुद्दों पर अभी भी समाज में जागरूकता लाने हेतु निरंतर प्रयास की आवश्यकता है। जीविका के सामुदायिक संगठनों के माध्यम से लैंगिक समानता जैसे विषयों पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं को जागरूक एवं संगठित किया जा रहा है।

लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तीकरण हेतु निम्न प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं:–

1. सामुदायिक संगठनों से जुड़ी महिलाएँ अब अपने स्वयं के नाम से पहचानी जाने लगी हैं, जबकि पूर्व में वे अपने ससुर, पति या बेटे के नाम पर जानी जाती थीं।
2. सामुदायिक संगठन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में महिलाओं की पूर्ण सक्रियता की वजह से उनमें विभिन्न विषयों पर जागरूकता एवं गतिशीलता बढ़ी है।
3. जीविकोपार्जन गतिविधियों से जुड़ने की वजह से महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। इन महिलाओं ने ऐसे कई क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ी है, जिसे सिर्फ पुरुषों के एकाधिकार वाला क्षेत्र माना जाता था।
4. इससे समाज एवं परिवार में महिलाओं का मान–सम्मान बढ़ा है और अब वे निर्णायक भूमिका में नज़र आने लगी हैं।
5. जीविका के सामुदायिक संगठनों के माध्यम से लैंगिक भेदभाव से संबंधित मुद्दों का समाधान निकालना आसान हुआ है।
6. सामुदायिक संगठनों की बैठकों में दीदियों को सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है, इससे वे मनरेगा, राशन, पेंशन, बीमा आदि सुविधाओं का लाभ उठा पा रही हैं।
7. ग्रामीण स्तर पर सभी घरों में शौचालय के निर्माण एवं उनके नियमित उपयोग से महिलाओं का सम्मान बढ़ा है।
8. शराबबन्दी के बाद से घरेलू हिंसा एवं यौन हिंसा में काफी कमी आई है। उल्लेखनीय है कि जीविका दीदियों की मांग पर ही बिहार में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा की गई थी।
9. महिला और पुरूष के बीच आपसी झिझक कम हुई है।
10. समूह से जुड़ी निरक्षर दीदियों ने भी अब हस्ताक्षर करना सीख लिया है। इससे उनका आत्मविश्वास काफी बढ़ा है।
11. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर भागीदारी के अतिरिक्त महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है। समूह से जुड़ी महिलाओं ने बड़े पैमाने पर पंचायती राज संस्थानों में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। राज्य में हुए पिछले कई चुनावों में बड़ी संख्या में मताधिकार का प्रयोग कर महिलाओं ने लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियां
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री अभिजीत मुखर्जी – यंग प्रोफेशनल